

MR. SPEAKER : This is a simple question, whereas you are introducing many new things in your question.

SHRI PILOO MODY : He is still thinking of the last Lok Sabha.

MR. SPEAKER : Next question.

दिल्ली में भुग्गी-भोंपड़ियों में रहने वालों के लिए नियत की गयी राशि

1625. श्री अंकार लाल बेरवा : क्या निर्माण और आवास मन्त्री यह बताने कि कृपा करेंगे कि :

(क) भुग्गी-भोंपड़ी हटाने की योजना के अन्तर्गत दिल्ली में भुग्गी-भोंपड़ियों में रहने वालों के लिए कितनी राशि नियत की गयी है; और

(ख) उन्हें कितने तथा किस क्षेत्रफल के प्लाट आवंटित करने का विचार है तथा उक्त आवंटन की शर्तें क्या हैं ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI I. K. GUJRAL) : (a) Upto 1970-71 a sum of Rs. 9.68 crores had been spent on the Scheme as shown below :-

Upto March—1967	Rs. 7.06 crores
1967-68	Rs. 0.32 crores
1968-69	Rs. 0.60 crores
1969-70	Rs. 0.90 crores
1970-71	Rs. 0.80 crores
Total :	Rs. 9.68 crores

A sum of Rs. 80 lakhs has been provided in the Budget for 1971-72.

(b) According to the current policy whenever the areas squatted upon are taken up for clearance, all the squatters are allotted alternative plots of about 25 square yards on rental basis.

श्री अंकार लाल बेरवा : मन्त्री महोदय ने जो उत्तर दिया है उससे पता चलता है कि पन्द्रह सालों के अन्दर 9.68 करोड़ रुपया खर्च किया है। मैं मन्त्री महोदय से पूछना चाहता हूँ कि चूँकि दिल्ली के अन्दर भुग्गी-भोंपड़ी की समस्या बहुत जटिल है, क्या उन्होंने कोई सर्वे किया है कि कितने आदमी उनमें रहते हैं क्योंकि उनमें 90 प्रतिशत के लगभग शेडयूल्ड कास्ट्स के लोग रहते हैं ?

श्री आई० के० गुजराल : मैंने कई दफे अर्ज किया है कि जिस वक्त दिल्ली में यह स्कीम लागू की गई थी उस वक्त सारी दिल्ली में तकरीबन 50 हजार भुग्गी-भोंपड़ियाँ समझी जाती थीं। उसके बाद से हम अभी तक जिनका इन्तजाम कर पाये हैं वह तकरीबन 60 हजार के हैं। और जो लोग रहते हैं जिन के लिए हमें कुछ करना है उन की तादाद एक लाख से ऊपर है।

श्री अंकार लाल बेरवा : मन्त्री महोदय ने अभी बतलाया कि 30 हजार लोगों का हम इन्तजाम कर चुके हैं। दिल्ली के अन्दर 8 लाख भोंपड़ियाँ हैं।

एक माननीय सदस्य : 9 लाख ।

श्री अंकार लाल बेरवा : 9 लाख हो सकती हैं। जो मैं कह रहा हूँ उससे यह एक लाख ज्यादा ही हैं। मन्त्री महोदय तो 30 हजार के ऊपर ही हैं। मैं मन्त्री महोदय से पूछना चाहता हूँ कि वह कब तक उन लोगों को मकान दे सकेंगे ?

श्री आई० के गुजराल : मैं आंकड़े ठीक करने के लिए अर्ज कर दूँ कि इस वक्त तकरीबन एक लाख भुग्गी-भौंपड़ियां हैं, 9 लाख नहीं। उन का मसला हम को हल करना है। अब मुश्किल यह आ रही है कि ज्यों-ज्यों इस मसले को हल किया जाता है, यह तादाद बराबर बढ़ती जाती है। जैसा मैं ने अर्ज किया शुरू में यह तादात 50 हजार नजर आती थी। अब तक हम 60 हजार का मसला हल कर चुके हैं, और इस वक्त उन की तादाद एक लाख से ऊपर है। इस के लिये मैं कहूँगा कि यह मसला तो मकानों के साथ जुड़ा हुआ है और मकानों का मसला बहुत गम्भीर है इस लिए यह कहना बहुत मुश्किल है कि कितना वक्त लगेगा।

श्री पन्नालाल वारूपाल : भुग्गी-भौंपड़ियों के मसले के अलावा हम देखते हैं कि लोग 60-70 वर्षों से दूसरों के मकानों में कबूतर और मुर्गियों की तरह से रहते चले आ रहे हैं। क्या उन के लिए भी कोई योजना बनाई गई है ताकि उन को किराये के मकानों में न रहना पड़े? उन को प्लॉट दिये जायें ताकि उजका मसला भी हल हो।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य का सवाल तो बहुत अच्छा है, लेकिन इस का ताल्लुक भुग्गी-भौंपड़ियों से नहीं है।

श्री पन्नालाल वारूपाल : उन की हालत भुग्गी-भौंपड़ी वालों से भी खराब है।

श्री बी० पी० मोर्य : माननीय मन्त्री ने अभी कहा है कि जैसे-जैसे सरकार भुग्गी-भौंपड़ी वालों को दूसरी जगह बसाने में मदद दे रही है, वैसे-वैसे भुग्गी-भौंपड़ियों की तादाद बढ़ती जा रही है। क्या यह सच है

कि जहां भुग्गी-भौंपड़ियों के बढ़ने का एक कारण यह है कि खेतिहर मजदूर देहात से शहरों की तरफ भाग रहे हैं, वहां उस का एक कारण यह भी है कि मन्त्री महोदय भुग्गी-भौंपड़ी वालों को जो वैकल्पिक जगह देते हैं, वह उन के काम करने के स्थान से आठ मील या उस से ऊपर होती है और चूंकि वे इतनी दूरी से काम करने के लिए नहीं आ पाते हैं, इस लिए वे उस जगह को छोड़ कर वापिस आ जाते हैं; यदि हां, तो क्या मन्त्री महोदय इस व्यवस्था को सुधारने के लिए यह कोशिश करेंगे कि भुग्गी-भौंपड़ी वालों को वैकल्पिक जगह उन के काम करने के स्थान के नजदीक दी जाये?

SHRI I. K. GUJRAL : It is a part of the problem. The problem has many dimensions. One of the problems is to find land where people can be settled, and we are trying to have a second look at the problem to provide accommodation to those people in nearby places. But then in a fast urbanising town and in a fast expanding town, it is not very easy to do so also.

SHRI PILOO MODY : If only he had attended the seminar that was held a couple of days back, he would have learnt something.

श्री रामावतार शास्त्री : मैं यह जानना चाहता हूँ कि अब तक दिल्ली में कितने भुग्गी-भौंपड़ी वालों को शहर से उठा कर दूसरी जगह बसाया गया है और क्या उन लोगों को यहाँ से उठा कर दूसरी जगह बसाने के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार और दिल्ली के जनसंघ प्रशासन की नीतियों में समानता है या कोई फर्क है; अगर कोई फर्क है, तो वह क्या है?

SHRI I. K. GUJRAL : The jhuggi-jhompri settlement problem is being dealt with by the DDA. The DDA has been created to solve some of these problems. There is no question of a political approach to this problem. The question is to settle them, and I do not think that there is any difficulty in evolving a policy. The issue is one of finding funds for doing so.

श्री हुकम चन्द कछवाय : क्या यह सही है कि दिल्ली की भुग्गी-भौंपड़ी समस्या का समाधान इसलिए नहीं हो पा रहा है कि हर महीने काफी लोग बाहर से आ कर दिल्ली में बस जाने हैं ? क्या यह भी सही है कि जो लोग इन भुग्गी-भौंपड़ियों में रहते हैं, उन में से काफी लोग सरकारी कर्मचारी हैं, जिन्होंने अपने नाम पर दस दस भुग्गी-भौंपड़ियाँ डाल कर अन्य लोगों को किराये पर उठायी हुई हैं और जब उन भुग्गी-भौंपड़ियों को हटाया जाता है, तो जो व्यक्ति उन में कई बरसों से रह रहे होते हैं, उन को कोई स्थान नहीं मिलता है; यदि हां, तो क्या सरकार के पास ऐसी कोई योजना है कि जब इन भुग्गी-भौंपड़ियों को हटाया जाये, तो उन में रहने वाले व्यक्तियों को प्लॉट आदि दिये जायें, चाहे वे किराये पर ही क्यों न रहने हों ?

श्री आई० के० गुजराल : जी, हां । यही योजना है ।

SHRI N. K. P. SALVE : The hon. Minister's answers are lacking in his usual conviction. Of the various factors which are involved in this problem and which are inhibiting him from taking up a massive building programme to house these poor people, may I know from him whether one of the inhibiting factors is his faith in the dictum that fools build houses and the wise live in them ?

SHRI I. K. GUJRAL : I count Shri Salve as a fool, not as a wise man.

श्री एन० एन० पांडे : अभी मन्त्री महोदय ने बताया है कि 1960 में तीस हजार भुग्गी-भौंपड़ियाँ थीं, सरकार ने साठ हजार का इन्तजाम कर दिया है, लेकिन अभी भी एक लाख और हैं । क्या मन्त्री महोदय कोई ऐसी जांच कराने जा रहे हैं कि दिल्ली में जितनी भुग्गी-भौंपड़ियाँ हैं, उन के सही आंकड़े मालूम हों, ताकि उस के अनुसार लोगों को बसाने या वैकल्पिक स्थान देने की व्यवस्था की जाये ?

SHRI I. K. GUJRAL : Sir, as I said earlier, in the debate, also, the plan basically has to be house-building oriented, and unless they are able to resort to some massive house-building programmes, the problem cannot be solved. Also, interlinked with this is the vast problem of mass urbanisation. It is not very easy for me to give detailed reply at this stage.

Future structure of Foreign Oil Companies in India

*1626. **SHRI C.K. CHANDRAPPA :** Will the Minister of PETROLEUM AND CHEMICALS be pleased to state :

(a) whether the Planning Commission has submitted a note to Government regarding the future structure of foreign oil companies in India:

(b) whether the Commission has favoured majority participation by Government as against outright nationalisation of the three foreign oil companies; and

(c) if so, Government's reaction thereto ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI DALBIR SINGH)

(a) No, Sir.

(b) and (c). Do not arise.